अजित फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित बाल पत्रिका माह दिसम्बर 2025 वर्ष 6 अंक 4

चहल पहल

अनुक्रमणिका

संपादकीय 3

कहानियां

चहचहाहट	पूनम पांडे	4
नई मुसीबत	डॉ. कुसुम रानी	6
उम्मीद अभी बाकी..	उपासना बेहार	10

कविताएं

आया जाड़ा	डॉ. प्रदीप कुमार	05
ऐ राजेन्द्र तुम्हें..	अंकुश्री	08
धूप	सुकीर्ति भटनागर	09
परियों वालें देश..	डॉ. बबिता सिंह	11
नन्हे पौधे की...	डॉ. राकेश चक्र	12
जाड़े वाली धूप	महेन्द्र कुमार	12
ऋतुओं की रानी	डॉ. सुधा गुप्ता	14
आई सर्दी	टिकेश्वर सिन्हा	14
क्रिसमस आया..	सुनील कुमार	22
दूधवाला	डॉ. सत्यवान	22
बिल्ली रानी	डॉ. विरेन्द्र कुमार	23
हंसी की गुड़िया	प्रियंका सौरभ	23

विविध

बाल पहेलियां	सुनील गज्जाणी	13
बच्चों का कोना	15 से 17	
भूल–भूलैया	चांद मोहम्मद घोसी	18
दुनियां के देश	संजय पुरोहित	19
जाने आकाश के.....	संजय श्रीमाली	24

अजित फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित
संपादक - संजय श्रीमाली
दिसम्बर 2025

आप अपनी रचनाएं इस ईमेल पते पर भेजे
chahalpahalnew@gmail.com

मुख्य आवरण पृष्ठ अंकित चित्र
धर्मा द्वारा बनाया गया है।

संपादकीय

मदद करने से सुखद अनुभूति होती है

प्यारे बच्चों

सर्दी आ चुकी हैं। कपड़ों के साथ-साथ हमारे खान-पान भी बदलाव आएगा। गर्म जैकेट एवं स्वेटर पहनने होगें। साथ ही खाने-पीने में गर्म चीजे ज्यादा पसन्द आएगी। हम सर्दी से अपना बचाव ता कर लेगें लेकिन हमें उनके बारे में भी सोचना होगा जो फुटपाथ पर बिना छत के अपना जीवन गुजार रहें है। उनके साथ महिलाएं एवं छोटे-छोटे बच्चें भी सर्दी की रातों में खुले आकाश के नीचे सोने को मजबूर होते है। ऐसे लोगों की हमें मदद करनी चाहिए। हमारे आस-पास अतिरिक्त गर्म कपड़े या कम्बल आदि हो तो उन्हें सस्नेह हमें देनी चाहिए। इससे हमारे मन में सुखद अनुभूति होगी। और जरूरतमंद की सहायता भी हो जाएगी। सेवा परामो धर्म। सेवा से बड़ा कोई धर्म नहीं है।

बच्चों दिसम्बर माह आ गया है। आपको पता है कि यह वर्ष का अन्तिम महीना होता है। फिर नए साल की शुरूआत। इस महीने में हमें कुछ आंकलन भी करना चाहिए कि पूरे वर्ष पर्यन्त हमने क्या-क्या किया और आगे क्या करना शेष है। हमें अपने जीवन को पूरी जीवटता से जीना चाहिए, इसके लिए समय-समय पर हमें आत्मकेन्द्रित होकर मंथन करना चाहिए।

दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में क्रिसमस का त्यौंहार आएगा। जोकि बच्चों के लिए बहुत ही उत्साह भरा रहता है। हंसी-खुशी क्रिमसम बनाते हुए नए उपहारों का प्राप्त करते हुए सभी खुश नजर आते है। इसलिए मैं कह रहा हूं कि हमें भी कुछ देना चाहिए ताकि हम दूसरों के जीवन में खुशियां ला सके।

हैप्पी क्रिसमस.....

संजय श्रीमाली

चहचहट

पूनम पांडे

धवल कुछ दिन के लिए मुम्बई से झाँसी आया हुआ था झाँसी में धवल की बुआ का घर है। धवल ने बुआ के घर पर विशाल आँगन देखा। तितलियाँ और पंछी देखे। यह सब उसने अपने कंप्यूटर की स्क्रीन पर ही देखे थे। सुबह उसे बुआ ने दूध बनाकर एक गिलास में पीने को दिया। गिलास लेकर धवल बाहर आँगन में आकर बैठ गया। माहौल एकदम हराभरा और सुकून देने वाला था।

चित्र – ख्याति

उसे गौरैया और तोते उड़ते हुए नजर आये। पेड़ पर अमरूद पक रहे थे। तोते अमरूद कुतर कर खा रहे थे। जामुन की शाखा पर गिलहरी भी किट–किट की आवाज करती खेल रही थी।

धवल के पैर के नजदीक आकर एक दो गौरैया फुदकती हुई इधर–उधर जा रही थी। धवल की खुशी का ठिकाना न था। उसके साथ तीन चार और थी। कितना हल्का बदन था इसका। आराम से फुटकर रही थी। कभी पंख पसारे उड़कर आम की डाली में जा रही थी। भूरे पंख और पीली चोंच वाली गौरैया को समूह में अपने आसपास देखकर धवल खुशी से फूला नहीं समा रहा था। वह एक बार फिर उसके नजदीक आ गई। धवल ने उसे छूने की कोशिश की। वह फुर्र से उड़कर गुडहल के पौधे पर जा बैठी। सूखा फूल कुतरने लगी। धवल को बहुत मजा आ रहा था। धवल देख रहा था कि इतनी छोटी सी यह गौरैया जरा भी नहीं थक रही। कमाल है इसकी चुस्ती–फुर्ती ।

तब तक बुआ रोटी का चूरा बनाकर बाहर ले आई थी। बुआ और

धवल मिलकर उसे फैलाने लगे। गौरैया का समूह आया और चट से अपनी चोंच में चूरा दबाकर उड़कर दूर चला गया। कुछ देर बाद फिर से गौरैया आ गई। देखो ना, रोटी का यह चूरा उनको बेहद पसंद आ रहा है बुआ। धवल ताली बजाने लगा। बुआ बोली, धवल, यह बहुत ही मनमोहक हैं, इनको मनुष्य की बस्ती और मनुष्य का संग साथ खूब भाता है। उधर देखो। उस बरामदे में दो घोंसले बने हुए हैं। इंसान के घर पर इनको अलग ही मजा आता है।

मगर धवल वह देखो। मोबाइल के ऊंचे टावर। धवल ने देखा। बुआ कहती जा रही थी। इनके रैडियैशन से इन छोटी गौरैया का दम निकलने लगता है। शहर में इन दिनों बहुत प्रदूषण होता है। इसलिए यह दिनों दिन कम होती जा रही हैं। धवल इनके कुदरती ठिकाने हौले हौले कम हो रहे हैं। कहते हुए बुआ का मन भारी हो गया।

धवल ने मन ही मन संकल्प किया कि मुम्बई जाकर वह बालकनी में गमले लगाकर कनेर, गुडहल, गेदा, मीठा नीम, जरूर लगायेगा। शायद कोई गौरैया आ जाये।

पता –पुष्कर रोड, अजमेर

आया जाड़ा

डॉ. प्रदीप कुमार मुख़र्जी

आओ करें ठंड का आलिंगन,
बनालें कंबल, रजाई ओढ़ने का मन।
दिन में धूप खूब भली और अच्छी लगती,
पर होते ही शाम कंपकंपी छूटती।
मूंगफली, गज़क, रेबड़ी मन को भाते,
थोड़ी गरमी भी शरीर में वे लाते।
मफलर–टोपी पहन ले सकते सैर का मज़ा,
वैसे भी देता जाड़ा कई तरह का मज़ा।
खाना–पीना सब कुछ तन को लगता,
धुप सेंकना कितना सुहाना लगता।
जाड़ा लाता ज़रूर सिहरन तन में,
लेकिन साथ ही भरता जोश भी मन में।

चित्र – राधाकृष्ण ओझा

पता – 43, देशबंधु सोसाइटी, दिल्ली

नई मुसीबत

डॉ. कुसुम रानी नैथानी

घने और शांत जंगल के बीच एक पुराने पीपल के पेड़ की छाँव में तीन गहरे दोस्त चंची नेवला, पीपी खरगोश और मिंटी कछुआ अक्सर मिलते। तीनों रोज़ सुबह ढ़ेर सारी बातें करते और खेलते। मिंटी थोड़ा गंभीर था पर उसकी जानकारी सबको हैरान कर देती थी। उसे जंगल की जड़ी–बूटियों की पहचान बहुत अच्छी थी। कौन–सी पत्ती बुखार में काम आती है, कौन–सी जख्म भरती है सब उसे याद था। पीपी अक्सर मज़ाक में कहता– "मिंटी, अगर तू डॉक्टर बन गया तो हमसे भी फीस लेगा ?"

चित्र : मुकुल

मिंटी मुस्कुराकर जवाब देता– "दोस्तों से कभी फीस ली जाती है क्या?" चंची हँसते हुए कहता– "बस ध्यान रखना, कहीं जड़ी–बूटियाँ ढूँढते–ढूँढते तू खुद कहीं गुम न हो जाना।" मिंटी को ये सुनकर हँसी आ जाती पर उस सुबह यह बात सच हो गई। सूरज निकल आया पर मिंटी बरगद के पेड़ के पास नहीं पहुँचा। थोड़ी देर इंतजार करने के बाद पीपी ने कहा – "अरे वह सबसे पहले आ जाता है। आज कहां देर हो गई उसे ?" चंची ने चारों ओर देखा और कहा– "कभी ऐसा नहीं हुआ कि वह समय पर न आए। चलो,

देखते हैं कहाँ रह गया।"

दोनों उसकी खोज में निकल पड़े। पहले उन्होंने पीकू तोते से पूछा– "पीकू भाई, तुमने मिंटी को देखा ?" पीकू ने पंख फड़फड़ाते हुए कहा –"सुबह उसे मैंने नदी की तरफ जाते देखा था। शायद कोई नई जड़ी की तलाश में था।" पीपी बोला– "तो चलो, वहीं चलते हैं।" रास्ते में उन्हें मीमी गिलहरी मिली। चंची ने उससे भी पूछा– "मीमी, मिंटी कहीं दिखा क्या ?"

मीमी ने सिर हिलाया– "सुबह उसकी पीठ पर एक टोकरी थी। उसमें कुछ पौधे रखे थे। वह पहाड़ी की दिशा में जा रहा था।"

पीपी ने माथा पकड़ा और कहा – "तो वह जड़ी बूटी ढूंढने अकेले ही निकल गया!" अब दोनों पहाड़ी की तरफ बढ़े। रास्ता थोड़ा ऊबड़–खाबड़ था। झाड़ियों के बीच से गुजरते हुए चंची को एक हल्की सी आवाज़ सुनाई दी।

"पीपी, रुको कुछ सुनाई दे रहा है।" दोनों ने ध्यान लगाया जैसे कोई कराह रहा हो। "बचाओ कोई है यहाँ ?" पीपी चौकन्ना हो गया। "ये तो मिंटी की आवाज़ लग रही है!" दोनों दौड़ पड़े। थोड़ी दूर पर एक छोटा–सा गड्ढा था और उसमें मिंटी उल्टा पड़ा हुआ था। उसका भारी खोल नीचे और पैर ऊपर की ओर थे। चंची ने तुरंत पूछा– "मिंटी! तू ठीक है?" मिंटी ने थकी हुई आवाज़ में कहा– "ठीक तो हूँ लेकिन सीधा नहीं हो पा रहा। सुबह मैं कुछ जड़ी–बूटियाँ ढूँढ रहा था, पैर फिसला और मैं गड्ढे में गिर गया।" पीपी नीचे झाँकते हुए बोला– "तूने बाहर आने की कोशिश नहीं की ?" मिंटी बोला– "बहुत की, लेकिन खोल भारी है। उल्टा पड़ा हूँ तो कुछ कर नहीं पा रहा।" अकेले उसे उठाना उनके बस का नहीं था। चंची ने फौरन कहा– "रुको, हम हैं ना!"

वह नीचे उतरा और बोला– "पीपी, ज़रा बेलें इकट्ठी कर।" पीपी भागा और पास की झाड़ियों से बेलें तोड़ लाया। उन्होंने बेलों को मिंटी के पैरों पर बाँधा। "अब तीन की गिनती पर खींचते हैं। "एक... दो.... तीन....!"चंची बोला। दोनों ने ज़ोर लगाया। मिंटी का खोल धीरे–धीरे हिलने लगा। थोड़ी मेहनत और एक अंतिम धक्का देने पर मिंटी पलटकर सीधा हो गया। उसने राहत की साँस ली और कहा –"ऊफ़! अगर तुम दोनों न आते तो मैं शायद पूरे दिन उल्टा पड़ा रहता।"

पीपी ने हँसते हुए कहा– "और हमें लगा कि तू कहीं कोई दुर्लभ जड़ी ढूँढने में मग्न है।"

चंची बोला– "तू सचमुच मेहनती है पर अगली बार अकेले मत निकलना।" मिंटी मुस्कुराया और बोला – "अब समझ गया हूँ। दोस्ती का मतलब यही है कि

कोई भी मुश्किल अकेले नहीं झेलनी पड़ती।" इतने में पीकू तोता और मीमी गिलहरी भी वहाँ आ पहुँचे। उन्हें खबर मिल चुकी थी कि तीनों दोस्त पहाड़ी की ओर गए हैं। पीकू बोला– "अरे, मिंटी मिल गया! हम सोच रहे थे कहीं किसी परेशानी में फँस न गया हो।" मीमी ने कहा– "सच बताना किस जड़ी के चक्कर में ये हुआ ?" मिंटी हँस पड़ा– "इस बार बस फिसल गया पर हाँ कुछ नई जड़ी बूटियाँ ज़रूर मिली हैं।"

उसकी बात सुनकर सभी हँस पड़े। वापसी के रास्ते में पीपी बार–बार मज़ाक करता रहा– "अब तेरी जड़ी–बूटियों का नाम 'नई मुसीबत' होगा।" मिंटी ने मुस्कुराते हुए कहा– "कुछ भी कह लो लेकिन इलाज में असर जरूर करेगा!" दोपहर तक सब पीपल के पेड़ के नीचे लौट आए। हवा में मिट्टी की खुशबू थी और दोस्तों के चेहरे पर सुकून। तीनों साथ बैठकर हँसते, बातें करते और सोचते कि जंगल की असली ताकत उस दोस्ती में है जो हर मुश्किल में साथ देती है।

पता – 318–ए, ओकांर रोड, यु.के.

(03दिसंबर : जन्मदिनपर)

ऐ राजेन्द्र तुम्हें प्रणाम !

अंकुश्री

बिहार के गाँव में जन्मे
जाने सारा आवाम
ऐ राजेन्द्र तुम्हें प्रणाम !

कुशाग्र थी बुद्धि तेरी
बिन हिंसा के किया काम
ऐ राजेन्द्र तुम्हें प्रणाम !

मृदुलता तो ऐसी थी
दुश्मन भी करे सलाम
ऐ राजेन्द्र तुम्हें प्रणाम !

बारह वर्ष राष्ट्रपति थे
रह गए आदमी आम
ऐ राजेन्द्र तुम्हें प्रणाम !

भाषाओं के ज्ञानी थे
नहीं कोई ताम–झाम
ऐ राजेन्द्र तुम्हें प्रणाम !

अमर वही बन जाता है
पाता मर कर भी सत्नाम
ऐ राजेन्द्र तुम्हें प्रणाम !

सादा जीवन उच्च विचार
यह नारा हुआ ललाम
ऐ राजेन्द्र तुम्हें प्रणाम !

देश का तू सच्चा सपूत
भारत करता तुम्हें प्रणाम
ऐ राजेन्द्र तुम्हें प्रणाम !

पता – 8ए–प्रेसकालोनी, राँची, झारखंड

धूप

सुकीर्ति भटनागर

उजली– उजली धूप सुनहरी,
जब आँगन में आती है।
मीठी– मीठी सी गर्माई,
अंगों में भर जाती है।।
सर्दी की ठिठुरी दोपहरी,
बिना धूप के सूनी है।
मुट्ठी में भर गर्म सिकाई,
नहीं अगर बिखराती है।।
भरी ठंड में बूढ़े– बच्चे,
बिस्तर में दुबके रहते।
पर खिड़की पर आते ही वह,
सबको बाहर लाती है।।

चित्र – धनन्जय जोशी

गुड़– गज्जक और मूँगफली,
भाती सबको सर्दी में।
धूप सुहानी सर्दी की तो,
मेवों सी मन भाती है।।

पटियाला

माह दिसम्बर का

शिवचरण चौहान

चित्र – राजेश सांखी

किट किट दांत बजाता आया
माह दिसम्बर का।।
नही बचे बक्से में
पहने हैं सारे कपड़े।
फिर भी कांप रहे हैं थर थर
अंग सभी अकड़े।
यह डिब्बा है वर्ष रेल का
अंतिम नंबर का।।
माह दिसम्बर का।।
माह जनवरी और फरवरी
आने वाला है।
पर जाड़े का जोर
और बढ़ जाने वाला है।
झर झर हिम् झरता है
चंदा नीले अम्बर का।।
माह दिसम्बर का।।

पता – कानपुर

उम्मीद अभी बाकी है

उपासना बेहार

ठंडी, गर्मी और बारिश तीनों दोस्त मजे से साथ साथ रहते हुए आ रही थी. इनको 4–4 माह काम पर जाना पड़ता था। ये अपने काम को बखूबी निभाती आ रही थी. जिस भी सहेली का जब समय आता वो अपने फिक्स महीने काम पर चली जाती। लेकिन पिछले कुछ सालों से इनके काम पर जाने के समय में गड़बड़ी होने लगी है। गर्मी को ज्यादा समय काम करना पड़ रहा है जबकि बारिश और ठण्ड के काम का समय कम हो गया है। कभी–कभी तो ये होता है कि बारिश बेसमय ठंड के और गर्मी के घर जा कर गिर पड़ती है। तीनों इस बदलती हुई परिस्थिति को देख हैरान हैं।

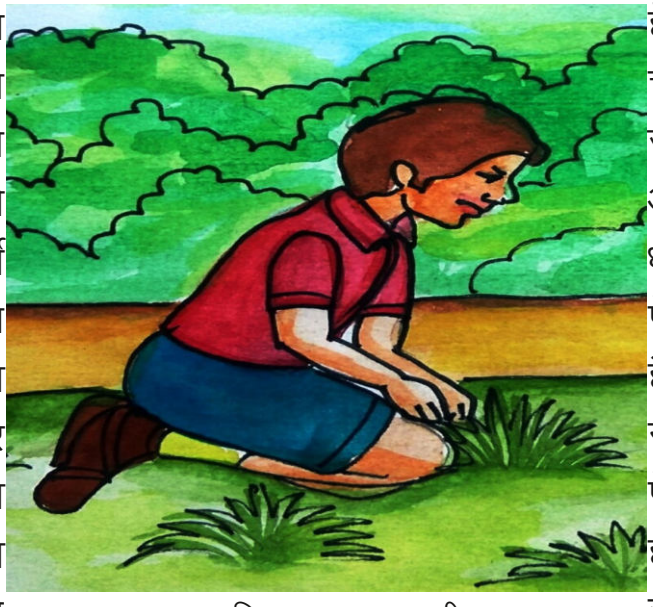

चित्र – राम भादानी

एक दिन ठंड ने गर्मी से कहा "दोस्त तुम लकी हो अब तुम्हारा समय ज्यादा हो गया लेकिन मेरा और बारिश का समय घट गया है, हमारे समय को भी तुम लेते जा रही हो।' गर्मी ने गंभीरता से कहा 'तुम्हें क्या पता मैं इस आग उगलते मौसम में कैसे रहती हूँ, पूरी झुलस जाती हूँ. मैं तो बिलकुल नहीं चाहती कि ज्यादा समय रहूँ लेकिन इन इंसानों ने अपने स्वार्थ के चलते धरती से बेहिसाब पेड़–पौधों को काट डाला है और अब भी रुकने का नाम नहीं ले रहें हैं। पेड़–पौधों के बिना तो हम तीनों का अस्तित्व ख़त्म हो जाएगा फिर ये पृथ्वी भी नहीं रहेगी.'

बारिश बहुत देर से इन दोनों की बात सुन रही थी, उसके आँख में आसूं आ गए, वो बोली 'आप दोनों सही बोल रही हैं, पृथ्वी विनाश की और बढ़ रही है।

इंसान अपनी विलासिता को ही केवल ध्यान दे रहा है। पहले पेड़–पौधों को काट कर गर्मी बढ़ा ली और अब गर्मी से बचने के लिए ए.सी. लगा कर वातावरण को और गर्म कर रहे हैं। वो यही नहीं रुके हैं इससे भी वातावरण खराब हो है। 'गर्मी ने कहा 'अब मुझमें कोई आस नहीं बची है। जिस दिशा में इंसान जा रहा है तो वो समय ज्यादा दूर नहीं है जब हमारे सामने बहुत सारी मुश्किलें पैदा हो जाएगी। तीनों ही असहाय महसूस कर रही थी।

तभी ठंड ने कहा 'देखो दोस्तों वो है हमारी उम्मीद की किरण।' गर्मी और बारिश ने उस तरफ देखा। धरती पर बहुत सारे बच्चे पेड़ लगा रहे थे। बारिश ने कहा 'मैं जा कर उनकी मदद करती हूँ. थोड़ा पानी दे देती हूँ जिससे पेड़ अपनी जड़ मिट्टी में जमा लेगें' ये कह कर वो बरसने चली गयी। गर्मी ने कहा 'चलो मैं थोड़ा ताप कम कर देती हूँ जिससे बच्चे आराम से पेड़ लगा सकें।' ये बोलते हुए गर्मी भी चली गयी. ठंड ने सोचा चलो 'मैं भी हल्की–हल्की हवा चला कर उन बच्चों को प्यार करती हूँ.' और तीनों नए सिरे से उत्साह से भर गयी।

पता– भोपाल, मध्यप्रदेश

परियों वाले देश में

डॉ. बबिता सिंह

गुड़िया रानी पहन के साड़ी।
परियों वाले देश चली
पहन के चश्मा बाँध के चोटी
पर्स बड़ा सा टाँग चली।

बैठ जरा फिर लगी सोचने
क्या–क्या लाएगी सामान.,
नए खिलौने सस्ते–सस्ते,
हल्के–फुल्के प्यारे बस्ते।

धरती पर तो महँगाई है,
वहाँ तो सस्ती मिठाई है,
चुनमुन के लिए गेंद भी लाना
मुझे उसे भी है बहलाना।

चित्र – प्रतिज्ञा

गेंद हवा में उछल गया,
हाथ से उसके फिसल गया
बिस्तर से वह गिरी धड़ाम
सपने में आया पैगाम।

पता– हाजीपुर वैशाली बिहार

नन्हे पौधे की सीख

डॉ राकेश चक्र

पौधा भी वही सबल होता,
जो मुश्किल से कब घबराता।
वह शीत, ताप से है लड़ता,
तूफानों से भी टकराता।
बढ़ता जाता है हँसी–खुशी,
तन–मन में नई उमंग भरे।
घबराए नहीं तमस से जो,
दुश्मन से भी वह नहीं डरे।
वह फूल–फलों से लद करके,
खुशियाँ बाँटे वह सबको ही।
वह साँसों को जीवन देकर,
कब इच्छा पाले है कोई।
नन्हा पौधा भी हमें सिखा,
जीवन भर मुस्काता रहता।
वह बाधाओं को रोज हरा,
हँसते–हँसते सब है सहता।
हम भी जीवन में बढ़े चलें,
तन–मन को सबल बनाएँगे।
उपकार करें, हम सफल बनें,
श्रम करके ही मुस्काएँगे।

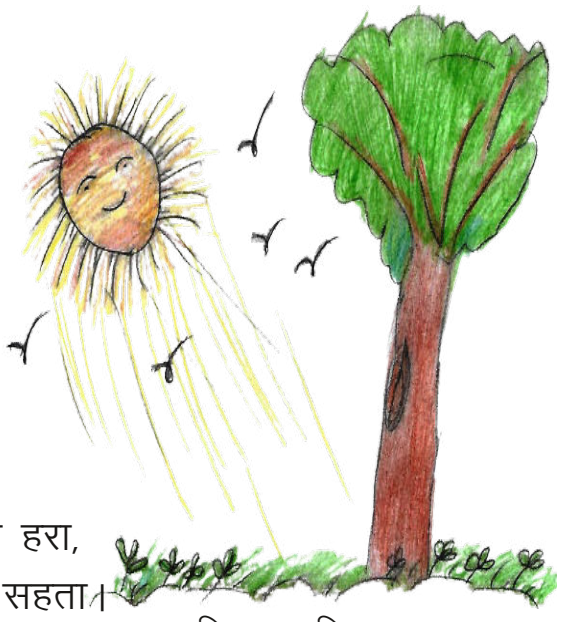

चित्र – राधिका जावा

पता– 90 बी, शिवपुरी

मुरादाबाद, उ.प्र.

चित्र – शुभम शर्मा

जाड़े वाली धूप

महेंद्र कुमार वर्मा

खुशियां खूब लुटाती है जाड़े वाली धूप,
सबके मन को भाती है जाड़े वाली धूप।
शीतलहर जी का जब कभी हमला होता है,
तब ठंडक बिखराती है जाड़े वाली धूप।
नरम रेशमी और गुलाबी दुपहरी लगती,
जब गरमी ले आती है जाड़े वाली धूप।
जिनके पास नहीं होते हैं कम्बल औ शाल,
उनको खूब लुभाती है जाड़े वाली धूप।
पत्तों फूलों पर आ आता है गजब निखार,
जब बगिया में आती है जाड़े वाली धूप।

पता– बी –68 ओल्ड मिनाल रेसीडेंसी

भोपाल, मध्य प्रदेश

बाल पहेलियां

सुनील गज्जाणी

1
तीन पावों पर दौड़े
रफ़्तार लिए
मगर लाचार रहता खड़ा सदा
अपनी एक ही जगह
है हैरत तो बताओं
नाम।

2
है वो बहुत ही
बातूनी
ना वो थकता ना वो सोता
नित्य कर्म उसका भी है दोस्तों
बोर नहीं होता इससे
संसार।

3
दोनों चीज़ें हैं एक
जैसी। मगर एक है
सच्ची एक झूठी ? ये कैसा माया जाल
है दोस्तों। किस वजह से
है एक सच्ची एक
झूठी ?

4
अंत कटे तो अर्थ है
कौवा
प्रथम कटे तो अर्थ है मीटर
मध्य कटे तो बने काज
बताइये ज़रा पहेली
का राज ?

उत्तर - 1. पंखा, 2. रेडियो,
3. पानी में परछाई, 4. कागज

पता – सुथारों की बड़ी गुवाड़, बीकानेर।

ऋतुओं की रानी है ठंडी

डॉ सुधा गुप्ता अमृता

ऋतुओं की रानी है ठंडी
लगती बड़ी सुहानी ठंडी
मफलर स्वेटर कोट पहनकर
सीसी कहे कहानी ठंडी
ताजी सब्जी लाल टमाटर
देती है वरदानी ठंडी
जो खाते हैं सभी सब्जियां
उनकी तो है नानी ठंडी
कोहरा बादल ओस दिखाती
करती है मनमानी ठंडी
गर्म चाय कॉफी पिलवाती
हाथ सेंकती रानी ठंडी
मुकुट टोप के तरह तरह के–

चित्र – मिनाक्षी शर्मा

पहन लगे महारानी ठंडी
दांत बजाकर डाँट लगाती
लगती है दीवानी ठंडी
पूस माघ में उढ़ा रजाई
याद दिलाती नानी ठंडी

पता – कटनी, मध्य प्रदेश

चित्र – रौनक

आई सर्दी

टीकेश्वर सिन्हा

ठंडी हवा लेकर,
आई सर्दी।
ओस की बूँदें पीकर,
आई सर्दी।
सूरज निकला
हुआ सवेरा।
चिड़ियों ने अपना
छोड़ा डेरा।
गीत गाए पेड़
झूम–झूम कर।
गुनगुनाए भौंरे
घूम–घूम कर।
खिलते फूलों पर,
सुहाई सर्दी।
ठंडी हवा लेकर,
आई सर्दी।

पता– घोटिया–बालोद, छत्तीसगढ़

बच्चों का कोना

अनन्या

दिव्यांशी

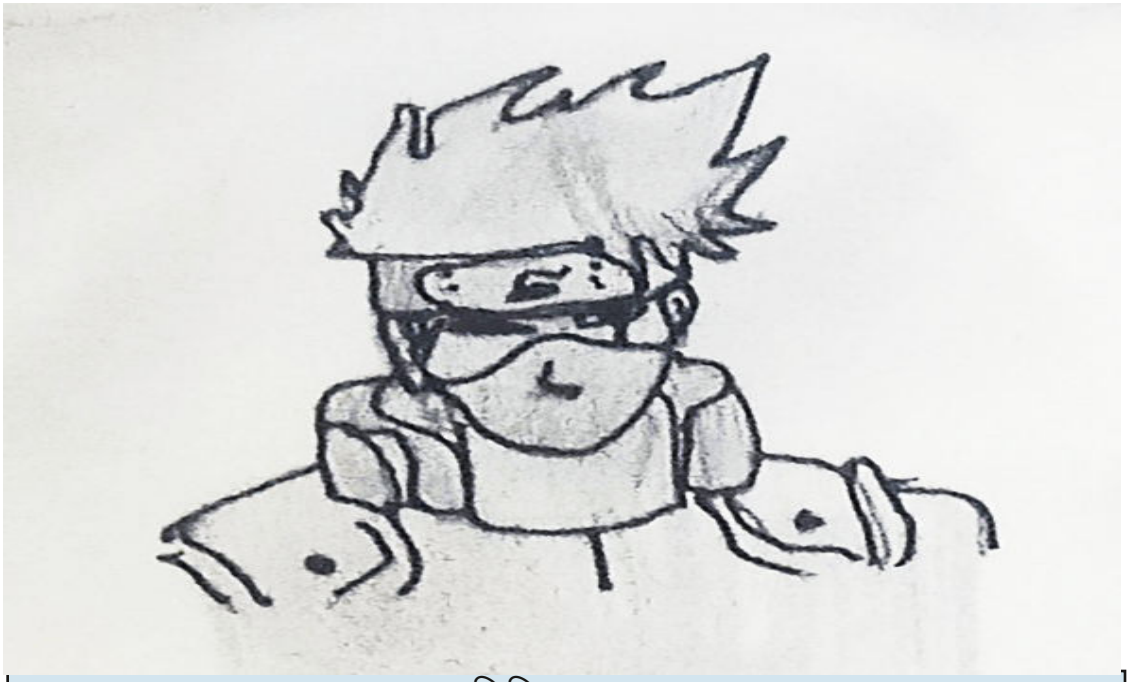

निमित्त माथुर

देविका व्यास

गौरी उपाध्याय

वसु रील

अवनी श्रीमाली

भूल-भुलैया

चांद मोहम्मद घोसी

पता - नन्हा बाजार, मेड़ता सिटी

दुनिया के देश

सेशेल्स

संजय पुरोहित

प्यारे प्यारे दोस्तों। कैसे है आप। सर्दियों का सीजन आ गया है। आपने गरम कपड़े निकाल लिये होंगे। बल्कि पहनने भी शुरू कर दिये होंगे। सर्दी के आगमन के साथ ही हमे ठण्डी चीजो की जगह गरमा–गरम चीजें पसंद आने लगती है। धूप सुहानी लगने लगती है। साथ ही एक्सरसाईज करने का भी मजा आता है। सही कहा ना हमनें ? एन्जॉय द विंटर सीजन। तो चलिये आज आपको एक प्यारे से देश की यात्रा पर लिये चलते हैं। यह देश है सेशेल्स। यह एक छोटा सा लेकिन बहुत ही सुंदर सा देश है जो इण्डियन ओशन में अफ्रीका के ईस्ट तट पर स्थित है। सेशेल्स अपनी नेचुरल ब्यूटी, समुद्र तट और जैव डाईवर्सिटी के लिये प्रसिद्ध है। एक समय ऐसा था कि ये केवल निर्जन द्वीपों के समूह के रूप में स्थित थे। 16वीं सेंचुरी में यहां पुर्तगाली खोजकर्ता पहुंचे। 18वीं सेचुरी में फ्रांस के लोगों ने यहां पर अपनी कॉलोनी बसाई। इसके बाद 1814 में इस पर इंग्लैण्ड ने कब्जा कर लिया। 1976 में सेशेल्स को इंग्लैण्ड से स्वतंत्रता प्राप्त हुई और यह एक गणराज्य यानी रिपब्लिक बना।

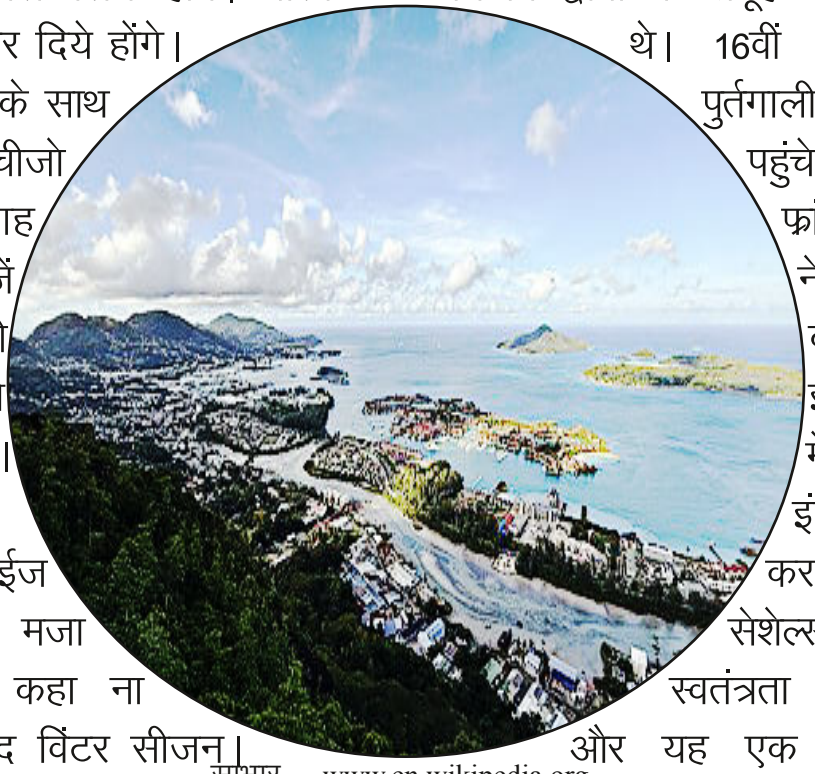

साभार – www.en.wikipedia.org

सेशेल्स में कुल 115 द्वीप हैं। सबसे बड़े द्वीप का नाम 'माहे' है। यहीं पर सेशेल्स की राजधानी विक्टोरिया स्थित है। सेशेल्स ईस्ट अफ्रीका से डेढ़ हजार किलोमीटर दूर स्थित है। इस देश में द्वीप

ही द्वीप है। इसलिये इसे द्वीपीय देश भी कहते हैं और इसकी कोई धरती से लगती सीमा नहीं है। फिर भी इसके पास के देशों में केन्या, तन्जानिया, मेडागास्कर, मॉरीशस और कोमोरोस हैं। सेशेल्स में 'अल्डाब्रा जायेंट टॉरटॉयज' जैसे विश्व के सबसे पुरानी और बड़ी कछुओं की प्रजातियां मिलती है। यही सेशेल्स का नेशनल एनीमल भी है।

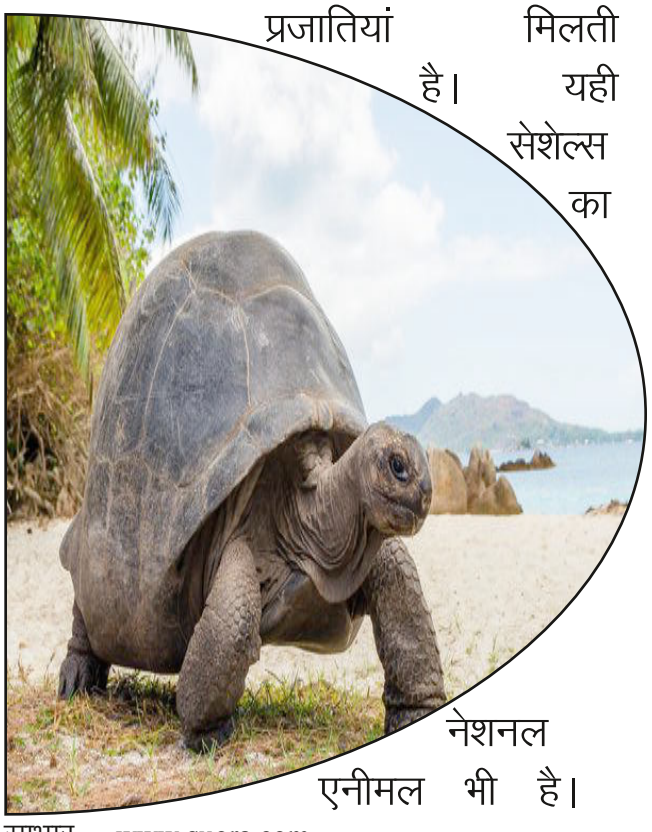

साभार – www.quora.com

'क्यूरिएयूज आईलैण्ड' अपने विशाल कछुओं व लाल मिट्टी के लिये प्रसिद्ध है। इनके अलावा 'सेशेल्स स्कॉप्स उल्लू' केवल सेशेल्स में ही पाया जाता है। सेशेल्स के प्रासलिन आईलैण्ड पर पाया जाने वाला 'सेशेल्स ब्लैक पैरेट' सेशेल्स का राष्ट्रीय पक्षी है। सेशेल्स की सी–लाईफ को देखने के लिये दुनिया भर से लोग खिंचे चले आते हैं। इसका कारण यह कि सेशेल्स के कोरल रीफ्स, रंग–बिरंगी मछलियां, शार्क, डॉल्फिन आदि बहुत ही आकर्षक समुद्री जीवन को समेटे हुए हैं। सेशेल्स का 'एन्से सॉर्स डे एर्जेंट' विश्व का सबसे सुंदर समुद्र तट स्थित है। सेशेल्स का 'अल्डाब्रा अटोल' और 'वेल्ले–डे मे नेचुरल रिजर्व' को यूनेस्को की हैरिटेज साईट में शामिल किया गया है। इसी स्थान पर 'कोको डे–मेर 'पाम ट्री मिलता है।

सेशेल्स की मुख्य फसलें नारियल, वनीला, दाल चीनी, केला, कसावा और शकरकंद हैं हालांकि यहां एग्रीकल्चर बहुत लिमिटेड स्थानों पर होती है इसलिये अधिकांश खाद्य सामग्री इम्पोर्ट की जाती है। सेशेल्स का सबसे बड़ा उद्य ोग पर्यटन है। इसके अलावा फिशिंग, नारियल उत्पाद, फूड प्रोसेसिंग, वनीला और दाल चीनी मसालों के उद्योग भी अच्छी संख्या में स्थित है। सेशेल्स ट्यूना मछली, नारियल, मसाले, शंख, सीप, मोती का एक्सपोर्ट करता है। सेशेल्स एक रिपब्लिक देश है। यहां प्रेजिडेंट ही 'हैड ऑफ द स्टेट' होता है। वो ही राज्य और सरकार के हैड होते हैं। यहां मल्टीपार्टी डेमोक्रेसी है और यहां की पार्लियामेंट को नेशनल एसेंबली कहा जाता है। इंग्लैण्ड से स्वतंत्रता प्राप्त करने के दिन 29 जून 1976 को सेशेल्स अपना स्वाधीनता दिवस

मनाता है। सेशेल्स की करंसी का नाम सेशेल्स रूपया है। सेशेल्स में तीन ऑफिशियल भाषाएं हैं। ये हैं सेशेल्वा क्रियोल, अंग्रेजी और फ्रेंच। सेशेल्स का मुख्य धर्म ईसाई है जिनमें दो तिहाई लोग रोमन कैथोलिक और शेष प्रोटेस्टेंट हैं।

साभार – www.holidify.com

सेशेल्स का नेशनल फ्लैग पांच रंगों की तिरछी पट्टियों वाला है। इनमें नीला, पीला, लाल, सफेद और हरा रंग शामिल होता है। सेशेल्स की नेशनल डिश प्वासन ग्रिया है। इनके अलावा लाडोब और शार्क चटनी भी प्रसिद्ध व्यंजन है। सेशेल्स विश्व का सबसे कम आबादी वाला देश है। इसकी आबादी केवल एक लाख है। यहां पाया जाने वाला 'कोको डे–मेर' दुनिया का सबसे भारी और बड़ा बीज होता है। सेशेल्स कभी पायरेट्स यानी समुद्री लुटेरों का गढ़ रहा था। सेशेल्स के समुद्र तटों को दुनिया के बेस्ट और सबसे स्वच्छ तटों में गिना जाता है। सेशेल्स में कोई परमानेंट नदी तो नहीं है लेकिन बहुत सारी छोटी छोटी बरसाती नदियां हैं। सेशेल्स में क्राईम रेट बहुत कम है इसी कारण से इसे अफ्रीका का सबसे सिक्योर्ड कंट्री माना जाता है। एक बात जो हमें सेशेल्स से सीखनी चाहिये और वो ये कि पर्यावरण की रक्षा कैसे की जाती है। सेशेल्स प्लास्टिक बैग फ्री जोन देश है। इसके लिये बहुत स्ट्रिक्ट कानून भी बना हुआ है।

तो ये थी एक बहुत प्यारे से, सुंदर से और छोटे से द्वीप देश सेशेल्स की यात्रा। आपको अवश्य ही पसंद आई होगी। अगले अंक में चलेंगे किसी और देश की यात्रा को। तब तक के लिये बाय–बाय। और हां अपना ख्याल रखियेगा।

पता– समीप सूरसागर, बीकानेर।

क्रिसमस आया हैं

सुनील कुमार माथुर

चित्र – अवनी श्रीमाली

देखों क्रिसमस आया हैं,
खुशियां अपार लाया हैं
प्रेम स्नेह का यह पावन दिवस आया है
अपने संग अपार उत्साह लाया हैं
गिरजाघरों को चार चांद लगाया हैं
अहिंसा, त्याग, तपस्या, धैर्य
सहनशीलता, परोपकार, ममता,
वात्सल्य का पैगाम लेकर आया है
क्रिसमस का यह पावन दिवस आया है
चारों ओर खुशियां ही खुशियां
लेकर आया हैं
सेंटा क्लोज आता है
बच्चों को उपहार दे जाता हैं
प्रेम स्नेह और भाईचारे का
वह जन जन को संदेश दे जाता हैं
क्रिसमस का यह पावन दिवस आया है
खुशियां अपार लाया हैं
दिल से दिल को जोडता हैं
मानव को मानवता का
पाठ यह पढ़ाता है
बच्चों में आदर्श संस्कारों का
यह पैगाम दे जाता हैं
आओं हम सब मिलकर
क्रिसमस का यह पावन दिवस
हर्षोल्लास और उमंग के साथ मनायें

पता– 33 वर्धमान नगर, पालरोड, जोधपुर

दूधवाला

डॉ. सत्यवान सौरभ

चित्र – मोहित रंगा

घर–घर आता सुबह शाम,
ड्रम दूध के हाथों में थाम।
दरवाजे पर आवाज लगाता,
संग में लस्सी भी लाता।
सुबह–सुबह जल्दी है उठता,
उठकर दूध इकट्ठा करता।
साफ–सफाई रखता पूरी,
तोल न करता कभी अधूरी।
मिलावट से है कतराता,
दूध हमेशा शुद्ध ही लाता।
आंधी, वर्षा, सर्दी, गर्मी,
भूल सदा समय पर आता।
सही समय पर आता दर पर,
चाय बने तभी तो घर पर।
सबको भाता ये मतवाला,
नाम है इसका दूधवाला।

पता –बड़वा (सिवानी) भिवानी, हरियाणा

बिल्ली रानी

डॉ. वीरेंद्र कुमार भारद्वाज

चित्र– राम भादाणी

बिल्ली रानी, बिल्ली रानी,
तुम होती हो बड़ी सयानी।
दूध–मलाई हम क्या खाएँ,
पहला हक जब आप जमाएँ।
सोंधी–मीठी खीर बनी थी,
तूने कैसे उसे चखी थी।
हम बनाते आप हैं खाती,
कभी आपको शरम न आती।
तुमको मौसी सब हैं कहते,
यही चरित्र आप में पलते।
मौसी तो ऐसी होती है,
बिल्कुल माँ जैसी होती है।
पर तुम तो सब चट कर जाती,
और डाँटने पर गुर्राती।
मौसी की कहीं होती मूँछ,
और पीछे यह तनती पूँछ।
पेड़ों पर भीचढ़ जाती हो,
मौसी हो क्या कर जाती हो।
पर यह तुम करती हो अच्छा,
डरकर भागते चूहा चच्चा।
तुम कहती हो–म्याऊँ–म्याऊँ,
शायद तुम कहती–मैंआऊँ।
हो भई तुम पुजी भी जाती,
किसी–किसी के भाग्यजगाती।
तो, जो लोग तुम्हें बुलाएँ,
सुनें विनती उसी घर जाएँ।

पता– सिपारा, पटना, बिहार

हँसी की गुड़िया

प्रियंका सौरभ

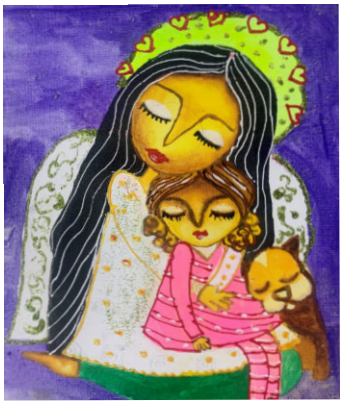

चित्र– आयुषी

गुड़िया हँसती, खिलती जाती,
हर गम को वो दूर भगाती।
चूड़ी बिंदी, रंगीन साड़ी,
परी जैसी उसकी सवारी।
बच्चे बोले गुड़िया प्यारी,
तेरी हँसी लगे सबसे न्यारी!
वो बोली– रो मत जीवन में,
हँसी ही हो हर संगम में।
उसके कपड़े बदलो रोज़,
खुशियाँ आएं संग हर रोज़।
कभी बने वो टीचर प्यारी,
कभी डॉक्टर, कभी अधिकारी।
गुड़िया सिखाए– स्वप्न देखो,
खुद पे विश्वास रखो, रेखो।
मैं तो एक खिलौना हूँ बस,
तुम हो जीवन की असली चमक!

पता – आर्यनगर, हिसार, हरियाणा

जाने आकाश के बारे में

संजय श्रीमाली

प्यारे बच्चों खगोल विज्ञान बहुत ही रोचक एवं विस्मय घटनाओं से ओत–प्रोत है। जहां हमें निरन्तर नई खोजे एवं जानकारियां मिलती रहती है। यहीं खोजें एवं जानकारियां हमें सोचने को मजबूर करती है कि क्या यह अंतरिक्ष अंतहीन है। आइए जानते है कि दिसम्बर माह में क्या कुछ विशेष खगोलिय घटनाएं होनी है।

दिनांक 4 दिसंबर को पूर्णिमा है। जिसे हम सुपरमून भी कहते है। इस संयोग प्रतिमाह होता है। यह वर्ष का वह समय होता है जब ठंडी सर्दियों की हवा आती है और रातें लंबी और अंधेरी हो जाती हैं। इस चंद्रमा को लॉन्ग नाइट्स मून और मून बिफोर यूल के नाम से भी जाना जाता है। यह 2025 के तीन सुपरमूनों में से आखिरी भी है। चंद्रमा पृथ्वी के सबसे करीब होगा और सामान्य से थोड़ा बड़ा और चमकीला दिख सकता है।

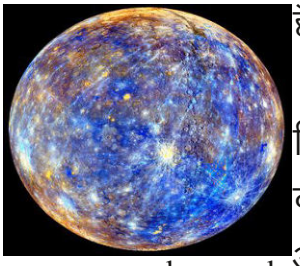

साभार www.livemint.com

साभार www.nhm.ac.uk

इसी प्रकार दिनांक 7 दिसंबर को हम बुध ग्रह का अवलोकन कर सकते है। बुध हमें पश्चिम दिशा में दिखाई देगा तथा बुध को देखने का सबसे अच्छा समय है क्योंकि यह सुबह के आकाश में क्षितिज के ऊपर अपने उच्चतम बिंदु पर होगा। सूर्योदय से ठीक पहले पूर्वी आकाश में निचले ग्रह को देखें।

दिनांक 13 एवं 14 दिसंबर को जेमिनीड्स उल्कापात का नजारा आप आकाश में देख सकते है। जेमिनीड्स उल्कापात का राजा है क्योंकि यह अपने चरम पर प्रति घंटे 120 बहुरंगी उल्काएं पैदा करती है। इसका निर्माण 3200 फेथॉन नामक क्षुद्रग्रह द्वारा छोड़े गए मलबे से हुआ है,

जिसे 1982 में खोजा गया था। यह शॉवर हर साल 7–17 दिसंबर तक चलता है। इस वर्ष यह 13 तारीख की रात और 14 तारीख की सुबह चरम पर है। इस वर्ष दूसरी तिमाही का चंद्रमा कुछ हल्के उल्काओं को रोक देगा, लेकिन जेमिनीड्स इतने अधिक हैं कि यह अभी भी एक अच्छा प्रदर्शन होना चाहिए। सबसे अच्छा दृश्य आधी रात के बाद किसी अंधेरी जगह से होगा। उल्काएं मिथुन राशि से विकीर्ण होंगी, लेकिन आकाश में कहीं भी दिखाई दे सकती हैं।

दिनांक 20 दिसंबर को अमावस्या होगी। चंद्रमा पृथ्वी के सूर्य के समान ही स्थित होगा और रात के आकाश में दिखाई नहीं देगा। इस दिन हम आकाशगंगाओं और तारा समूहों जैसी धुंधली वस्तुओं का निरीक्षण करने के लिए यह महीने का सबसे अच्छा समय है क्योंकि इसमें हस्तक्षेप करने के लिए चांदनी नहीं होती है।

दिनांक 21 दिसंबर को दिसंबर संक्रांति है। दिसंबर संक्रांति 15:02 यूटीसी पर होती है। पृथ्वी का दक्षिणी ध्रुव सूर्य की ओर झुका होगा, जो आकाश में अपने सबसे दक्षिणी स्थान पर पहुंच जाएगा और 23.44 डिग्री दक्षिणी अक्षांश पर सीधे मकर रेखा के ऊपर होगा। यह उत्तरी गोलार्ध में सर्दी का पहला दिन (शीतकालीन संक्रांति) और दक्षिणी गोलार्ध में गर्मी (ग्रीष्म संक्रांति) का पहला दिन है।

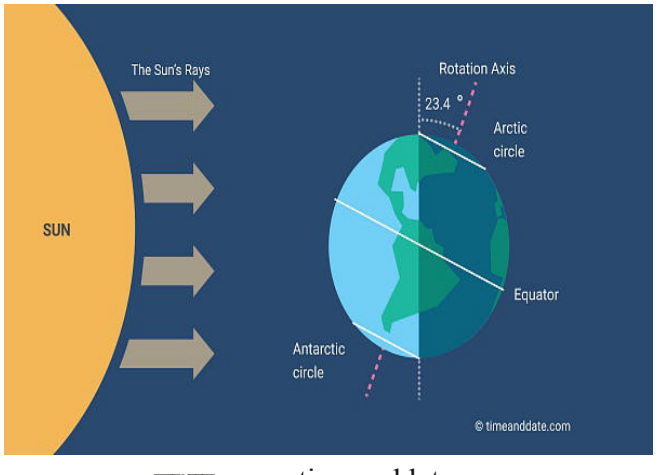

साभार www.timeanddate.com

आकाश में ग्रहों की स्थिति
(14 दिसम्बर 2025)

ग्रह	उदय	अस्त	मध्याहन	स्थिति
बुध	5:48	16:29	11:09	सामान्य
शुक्र	06:55	17:19	12:07	दुर्बल
मंगल	07:53	18:07	13:00	दुर्बल
गुरू	19:56	09:37	02:47	अच्छा
शनि	12:56	00:42	18:49	अच्छा
यूरेनस	16:02	5:32	22:47	सामान्य
नेपच्यून	13:04	01:01	19:02	दुर्बल

अजित फाउण्डेशन

प्रिय सदस्यों

आपको 'चहल-पहल' पढ़कर अच्छा लगा होगा। 'चहल-पहल' के पिछले अंको को पढ़ने हेतु आप अजित फाण्डेशन की वेब साईट https://ajitfoundation.net पर जाकर डाउनलोड कर सकते है। साथ ही अजित फाउण्डेशन पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों की सूचि https://www.libib.com/library लिंक पर देख सकते है और युवाओं के लिए होने वाली मासिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

संस्था के सामुदायिक पुस्तकालय में पुस्तकें पढ़ने के साथ-साथ खिलौने, पेन्टिग एवं अन्य रोचक गतिविधयों में भाग ले सकते है। इससे आपको बहुत कुछ नया सीखने को मिलेगा।

पुस्तकालय का समय - प्रातः 11:00 से सायं 6:00 बजे तक है।

हमारा पता – अजित फाउण्डेशन
आचार्यों की ढाल, सेवगों की गली, बीकानेर। मो. 7014198275 9509867486
अपनी रचनाएं ईमेल पर ही भेजे chahalpahalnew@gmail.com